कक्षा : बारहवीं – जैन सिद्धान्त शास्त्री (परीक्षा 23 जुलाई, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) आचारांग सूत्र के कुल उद्देशक हैं-
(क) 36 (ख) 85
(ग) 18 (घ) 70 (ख)

(b) आचारांग सूत्र के पाँचवें अध्ययन के पाँचवें उद्देशक में आचार्य की तुलना की गई है-
(क) जलाशय (ख) समुद्र
(ग) नदी (घ) गंगा (क)

(c) आचारांग सूत्र के प्रथम के श्रुतस्कन्ध के नवमें अध्ययन का नाम है-
(क) शस्त्र परिज्ञा (ख) विमोह
(ग) उपधानश्रुत (घ) धूत (ग)

(d) आठवें गुणस्थान में परीषह होते हैं-
(क) 22 (ख) 20
(ग) 18 (घ) 21 (घ)

(e) चौथी नरक में पहले गुण में कितनी प्रकृतियों का बंध होता है-
(क) 101 (ख) 100
(ग) 96 (घ) 71 (ख)

(f) देवगति में समुच्चय बंध होता है-
(क) 104 (ख) 100
(ग) 120 (घ) 117 (क)

(g) तिर्यंच जीव में पाँचवें गुणस्थान में बंध होता है-
(क) 69 (ख) 71
(ग) 66 (घ) 70 (ग)

(h) अनाहारक में गुणस्थान पाये जाते हैं-
(क) 7 (ख) 6
(ग) 4 (घ) 5 (घ)

(i) तीर्थंकर प्रकृति का बंध होता है-
(क) 4-8गुणस्थान (ख) 1-4 गुणस्थान
(ग) 1-11 गुणस्थान (घ) 4-14 गुणस्थान (क)

(j) कोक्क धातु का अर्थ है-
(क) सुनना (ख) बुलाना
(ग) करना (घ) जाना (ख)

(k) सिद्धों के आत्म प्रदेशों की अवगाहना जघन्य होती है-
(क) 333 धनुष 32 अगुंल (ख) 500 धनुष
(ग) 1 हाथ 8 अंगुल (घ) 300 धनुष (ग)

(l) पाँचवें गुणस्थान में ध्यान पाये जाते हैं-
(क) 3 (ख) 2
(ग) 1 (घ) 4 (घ)

(m) संवर के विस्तार से कितने भेद हैं-
(क) 57 (ख) 69
(ग) 20 (घ) 05 (ख)

(n) किस दिशा में रहे आत्म प्रदेशों द्वारा कर्म स्कन्धों का ग्रहण होता है-
(क) पूर्व (ख) पश्चिम
(ग) दक्षिण (घ) सभी दिशा (घ)

(o) औदारिक मिश्र काययोग में 13वें गुणस्थान में कितनी प्रकृतियों का बंध होता है-
(क) 17 (ख) 1
(ग) 74 (घ) एक भी नहीं (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(a) पर्यायार्थिक नय की अपेक्षा जीवादि पदार्थ शाश्वत हैं। (नहीं)

(b) आचारांग प्रथम श्रुतस्कन्ध के द्वितीय अध्ययन का नाम लोक विजय है। (हाँ)

(c) द्वादशांगी त्रिपदी का विस्तार है। (हाँ)

(d) परदेशी राजा दूसरे देवलोक के सूर्याभ विमान में देव रूप उत्पन्न हुआ। (नहीं)

(e) बंध और मोक्ष तेरे अपने मन में ही है। (हाँ)

(f) सभी जीवों में आत्म प्रदेश समान ही होते हैं, यह दीपक के दृष्टान्त से समझाया गया। (हाँ)

(g) महावीर ने छद्मस्थावस्था में एक बार भी प्रमाद का सेवन नहीं किया। (हाँ)

(h) जिसमें सर्वज्ञता प्रकट हो गई है, उसे निर्ग्रन्थ कहते हैं। (नहीं)

(i) पूर्वजों की मान्यता को कैसे छोड दूँ ? इस प्रश्न के उत्तर में लोह वणिक का उदाहरण दिया गया। (हाँ)

(j) अच्छ धातु का अर्थ जाना होता है। (नहीं)

(k) अन्तिम दो शुक्ल ध्यान केवली को होते हैं। (हाँ)

(l) ए और ओ के बाद स्वर होने पर सन्धि होती है। (नहीं)

(m) ऐसे शब्द जिनके रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता, अव्यय कहलाते हैं। (हाँ)

(n) होई+इह की सन्धि होईह होती है। (नहीं)

(o) महा+उसव की सन्धि महोसव होती है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1=(15)**

(a)	वृत्तिकार आचारांग सूत्र	(क) चतुर्दश पूर्वधारी	शीलांकाचार्य
(b)	लोक विजय अध्ययन	(ख) आकाश	6 उद्देशक
(c)	केशी कुमार श्रमण	(ग) वड्ढ	चतुर्दश पूर्वधारी
(d)	कूटाकारशाला	(घ) 11 परीषह	भेरी
(e)	णह	(च) पुत्र	आकाश
(f)	बढ़ना	(छ) संस्थान	वड्ढ
(g)	जिन भगवान	(ज) प्रत्येक प्रकृति	11 परीषह
(h)	कषाय कुशील	(झ) शीलांकाचार्य	4 संयम
(i)	संयतासंयत	(य) 6 उद्देशक	67 का बंध

(j)	पृथक्त्व वितर्क शुक्ल ध्यान	(र) भेरी	तीन योग
(k)	निदान	(ल) 4 संयम	आर्त्तध्यान
(l)	अप्रमत्त संयत	(व) 67 का बंध	धर्मध्यान
(m)	निर्माण	(क्ष) तीन योग	प्रत्येक प्रकृति
(n)	कुब्जक	(त्र) आर्त्तध्यान	संस्थान
(o)	सुणु	(ज्ञ) धर्मध्यान	पुत्र

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1 = (15)**

(a)	मेरा सार संयम है।	ज्ञान
(b)	मेरे उत्तर में तीर्थंकर त्रिपदी का उपदेश कहते हैं।	तत्त्व क्या हैं।
(c)	मेरा अर्थ श्रुत है।	वितर्क
(d)	मैं पहले से छठे गुणस्थान तक रह सकता हूँ।	आर्त्तध्यान
(e)	मेरा अधिकतम काल परिणाम अन्तर्मुहूर्त्त है।	ध्यान
(f)	मुझे शैक्ष कहते हैं।	नवदीक्षित साधु
(g)	मेरे 9 भेद हैं।	प्रायश्चित्त
(h)	जाने हुए तत्त्वों का चिन्तन करना मेरा स्वरूप है।	अनुप्रेक्षा
(i)	मैं प्रत्येक कर्म की उत्कृष्ट स्थिति का बंध कर सकता हूँ।	मिथ्यादृष्टि संज्ञी पंचेन्द्रिय
(j)	मैं शीतल शरीर में उष्ण प्रकाश का नियामक कर्म हूँ।	आतप
(k)	मैं जीव के विचार, विवेक व दृष्टिकोण को प्रभावित करता हूँ।	दर्शन मोहनीय कर्म
(l)	मेरे उदय में जीव को चलते-चलते नींद आ सकती है।	प्रचला-प्रचला
(m)	हम मनुष्य प्रायोग्य का बंध नहीं करते।	तेउ-वायुकाय
(n)	मेरा बोध कराने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।	सम्बन्ध
(o)	मैं त सर्वनाम पुल्लिंग की सप्तमी विभक्ति के एकवचन का रूप हूँ।	तम्मि/तंसि/तस्सिं/तहिं

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2=(16)**

(a) जाए सद्धाए णिक्खंतो तमेव अणुपालिया विजहित्ता विसोत्तियं। का अर्थ लिखिए।

उ. जिस प्रबल इच्छा से (मनुष्य) (अहिंसा-पथ पर) निकला हुआ (है), उस (प्रबल इच्छा) को ही बनाए रखकर (तथा) हिंसात्मक चिन्तन को छोड़कर (वह) (चलता जाय)।

(b) धर्म मेरी आज्ञा में हैं, इसके वृत्तिकार ने कौनसे दो अर्थ किये हैं ?

उ. 1. जिससे सर्वतोमुखी ज्ञापन किया जाय- बताया जाय, उसे आज्ञा कहते हैं। आज्ञा से (शास्त्रोक्त

आदेशानुसार) मेरे धर्म का सम्यक् अनुपालन करें।

2. धर्माचरणनिष्ठ साधक कहता है- एक मात्र धर्म ही मेरा है, अन्य सब पराया है, इसलिए मैं आज्ञा से (तीर्थंकर उपदेश से) उसका सम्यक् पालन करूँगा।

(c) केवली तथा श्रुतकेवली में ज्ञान की अपेक्षा क्या अन्तर है ?

उ. केवलीज्ञानी सम्पूर्ण तत्त्व को प्रत्यक्षरूप से जानते हैं, जबकि श्रुतकेवली श्रुतज्ञान के द्वारा परोक्ष रूप से जानते हैं।

(d) तपसा निर्जरा च- सूत्र का अर्थ लिखिए।

उ. तप से संवर और निर्जरा होती है।

(e) दस उत्तम धर्मों का नामोल्लेख कीजिए।

उ. क्षमा, मार्दव, आर्जव, शौच, सत्य, संयम, तप, त्याग, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य।

(f) सिद्ध्यमान गति के क्या-क्या हेतु हैं ?

उ. 1. पूर्व प्रयोग, 2. कर्मों के संग का अभाव, 3. कर्मों के बंधन का छेदन, 4. उर्ध्वगमन का स्वभाव।

(g) सम्पूर्ण कर्मों के नाश होने पर कौनसे तीन कार्य एक साथ एक समय में होते हैं ?

उ. 1. शरीर वियोग, 2. सिद्ध्यमान गति, 3. लोकान्त प्राप्ति।

(h) 55 प्रकृतियों के उल्लेख से सम्बन्धित प्रथम गाथा लिखिए।

उ. जिण सुर विउवाहारदु देवाउ य नरय सुहुम विगलतिग।

एंगिंदि थावरायव, नपुमिच्छं हुंड छेवट्टं।।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए- 8x3 = (24)

(a) 16 संज्ञाएँ कौनसी हैं, लिखिए।

उ. 1. आहार संज्ञा, 2. भय संज्ञा, 3. मैथुन संज्ञा,4. परिग्रह संज्ञा, 5. क्रोध, 6. मान, 7. माया, 8. लोभ, 9. लोक, 10. ओघ, 11. सुख, 12. दुख, 13. मोह, 14. विचिकित्सा, 15. शोक, 16. धर्म।

(b) णो हीणे, णो अइरित्ते- इस सूत्र की व्याख्या कीजिए।

उ. आत्मा की विविध योनियों में भ्रमणशीलता का सूचन करते हुए उस योनि, जाति व गौत्र आदि के प्रति अहंकार व हीनता के भावों से स्वंय को त्रस्त न करने की सूचना दी है। संसार में न कोई हीन अर्थात् नीच है, न कोई अतिरिक्त अर्थात् विशेष ऊँचा है। इस विराट् विश्व में परमाणु जितना भी ऐसा कोई प्रदेश नहीं है जहाँ जीव जन्मा न हो, मरा न हो। जब ऐसी स्थिति है तो फिर किस स्थान का अहंकार करें।

(c) पुरिसा ! अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ एवं दुक्खा पमोक्खसि- की व्याख्या कीजिए।

उ. यहाँ आत्मा के निग्रह का अर्थ है- कषाय आत्मा को वश में करना अर्थात् राग-द्वेष या क्रोधादि विभावों में रहने वाली आत्मा को सम्यग्ज्ञान, दर्शन व चारित्र के द्वारा वश में करने से शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक सभी दु-खों से मुक्ति मिल जाएगी।

(d) समियाए धम्मे आरिएहिं पवेदिते- सूत्र के कोई तीन अर्थ लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई तीन मान्य-

1. आर्यों- तीर्थंकरों ने समता में धर्म बताया है। 2. भगवान ने देशार्य, भाषार्य, चारित्रार्य आदि आर्यों में समता से अर्थात् निष्पक्षता पूर्वक धर्म का कथन किया है। 3. समस्त हेय बातों से दूर आर्यों ने कषायादि की उपशान्ति में प्रकर्ष रूप से या आदि में धर्म कहा है। 4. तीर्थंकरों ने उन्हीं को धर्म-प्रवचन कहा है, जिनकी इन्द्रियाँ और मन उपशान्त थे।

(e) देवलोक के देव चाहते हुए भी किन-किन कारणों से मनुष्य लोक में नहीं आ पाते ?

उ. 1. देवलोक के दिव्य कामभोगों में मूर्च्छित, गृद्ध अथवा आसक्त हो जाने से।

2. देवलोक के दिव्य कामभोगों में मूर्च्छित होने के कारण मनुष्य सम्बंधी राग (आकर्षण) समाप्त हो जाने से।

3. देवलोक के दिव्य कामभोगों में मूर्च्छित यावत् तल्लीन होने के कारण।

4. मनुष्य लोक सम्बंधी दुर्गन्ध, अतिशय तीव्र प्रतिकूल और अनिष्टकर लगने से।

(f) आचारांग में मनुष्य और वनस्पति की तुलना किस प्रकार की गई है ?

उ. जैसे मनुष्य जन्म लेता है, बढ़ता है, सुख, दुःख का अनुभव करता है, बदलता है और नाश को प्राप्त हो जाता है, उसी प्रकार वनस्पतिकाय के जीवों में भी ये सभी अवस्थाएँ होती हैं।

(g) बंध के हेतुओं के बारे में कौन-कौनसी परम्पराएँ हैं ?

उ. तीन परम्पराएँ दृष्टिगत होती हैं- 1. कषाय और योग, दो बन्ध हेतु, 2. मिथ्यात्व, अविरति, कषाय और योग, 3. मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग।

(h) दुःख-उत्पत्ति के चार कारण कौनसे हैं ?

उ. 1. अनिष्ट वस्तु संयोग, 2. इष्ट वस्तु का वियोग, 3. प्रतिकूल वेदना, 4. भोग की लालसा।